और उसका नाम कहा जाता है, परमेश्वर का वचन

प्रकटीकरण 19:11–13 (NKJV)

11 तब मैंने स्वर्ग खुला देखा, और देखो, एक सफ़ेद घोड़ा। और
उस पर बैठा हुआ कहा गया विश्वसनीय और सत्य, और धर्म से वह
न्याय करता है और युद्ध करता है।
12 उसकी आँखें अग्नि की लौ जैसी थीं, और उसके सिर पर कई
मुकुट थे। उसके नाम को कोई नहीं जानता सिवाय उसके स्वयं के।
13 और वह रक्त में डूबे वस्त्र से ढंका हुआ था; और उसका नाम
कहा जाता है: परमेश्वर का वचन।

येशु को “परमेश्वर का वचन” क्यों कहा जाता है?

इस प्रभावशाली दृष्टि में, यूहन्ना येशु को उनके पृथ्वी पर नाम “येशु नासरी” या “परमेश्वर का पुत्र” के रूप में नहीं पहचानते, बल्कि उन्हें “परमेश्वर का वचन” कहते हैं।
यह केवल काव्यात्मक नहीं है, बल्कि थियोलॉजिकल दृष्टि से बहुत गहरा है।

यूहन्ना 1:1,14 (NKJV) इस संबंध को स्पष्ट करता है:

1 आरंभ में वचन था, और वचन परमेश्वर के पास था, और वचन

परमेश्वर था।
14 और वचन मांस बन गया और हमारे बीच निवास किया…

यह हमें दिखाता है कि येशु केवल परमेश्वर का संदेशवाहक नहीं हैं – वे स्वयं वचन हैं।
ग्रीक शब्द Logos का अर्थ है दिव्य तर्क, बुद्धि या अभिव्यक्ति।
वे मानवता के प्रति परमेश्वर की संचार का साक्षात रूप हैं – शाश्वत, शक्तिशाली और सृजनशील।

येशु: व्यक्ति और वचन दोनों

सच्चाई में मसीह को जानने के लिए हमें उन्हें दो पहलुओं में समझना होगा:

येशु व्यक्ति – अवतारित परमेश्वर का पुत्र, जिसने पृथ्वी पर चला, हमारे पापों के लिए मृत्यु को प्राप्त किया, पुनर्जीवित हुआ और अब महिमा में राज्य करता है।
येशु वचन – परमेश्वर की इच्छा, बुद्धि और शिक्षाओं का प्रत्यक्ष रूप, जो शास्त्रों के माध्यम से प्रकट हुआ।

अधिकांश ईसाई येशु व्यक्ति को मानते हैं – उनके चमत्कार, क्रूस और पुनरुत्थान के माध्यम से हम मोक्ष प्राप्त करते हैं

(रोमियों 10:9–10)।
लेकिन कम ही लोग येशु को वचन के रूप में स्वीकार करते हैं – यानी उनके शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन की नींव बनाने के लिए।

वचन का पालन करना

येशु को वचन के रूप में अपनाना मतलब है उनकी शिक्षाओं के अनुसार जीना।
इसके लिए आज्ञाकारिता, अनुशासन और आंतरिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

याकूब 1:22 (NKJV):

लेकिन वचन के करने वाले बनो, केवल सुनने वाले नहीं, जो अपने
आप को धोखा देते हैं।

यूहन्ना 14:23 (NKJV):

येशु ने उत्तर दिया और कहा: यदि कोई मुझसे प्रेम करता है, वह मेरा वचन रखेगा…

जब हम येशु के शब्दों को अंतःकरण में उतारते और पालन करते हैं, तो हम केवल एक शिक्षक का अनुसरण नहीं कर रहे – हम उनकी प्रकृति में रूपांतरित हो रहे हैं, उनकी सत्ता के साथ कार्य करने में सक्षम हैं।

क्यों कुछ प्रार्थनाएं अनुत्तरित रहती हैं

कई विश्वासियों ने चमत्कार की उम्मीद में येशु से पुकारा, परंतु उनके चरित्र में परिवर्तन नहीं हुआ।
जैसे गणित को न समझते हुए केवल कैलकुलेटर का उपयोग करना, वे बाहरी सहायता पर निर्भर रहते हैं बिना आंतरिक विकास के।

मत्ती 17:17 (NKJV):

येशु ने उत्तर दिया और कहा, “हे अविश्वासी और दुष्ट पीढ़ी! मैं कितने समय तक तुम पर रहूँ? मैं कितने समय तक तुम्हें सहूँ?”

येशु केवल विश्वास की कमी को ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक

परिपक्वता की कमी को भी डाँटते हैं – वचन के साथ जुड़ने और बढ़ने की अनिच्छा।

सबसे पहले राज्य को खोजने की शक्ति

चीज़ों (चिकित्सा, धन, आशीष) की अपेक्षा करने के बजाय, येशु हमें सिखाते हैं कि सबसे पहले परमेश्वर का राज्य और धर्म खोजो, और बाकी सब कुछ जोड़ा जाएगा।

मत्ती 6:33 (NKJV):

सबसे पहले परमेश्वर का राज्य और उसकी धार्मिकता खोजो, और यह
सब तुम्हें दिया जाएगा।

जब हम वचन को प्राथमिकता देते हैं, हम स्वयं को परमेश्वर के राज्य की व्यवस्था में संरेखित करते हैं – दुनिया की व्यवस्था में नहीं।
हम परमेश्वर से भिक्षा करके नहीं, बल्कि राज्य के सिद्धांतों के अनुसार चलकर प्राप्त करते हैं।

जब वचन हमारे भीतर जीवित हो

यूहन्ना 15:7 (NKJV):

यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरे शब्द तुम में बने रहें, तो
तुम जो चाहो मांगोगे, और वह तुम्हारे लिए पूरा होगा।

यह कोई खाली चेक नहीं है, बल्कि यह येशु के वचन के माध्यम से उनके साथ संघ पर आधारित वादा है।
जब उनका वचन हमारे भीतर रहता है, हमारी इच्छाएं उनकी इच्छा के अनुरूप होती हैं, और हमारी प्रार्थनाएं प्रभावशाली और सफल हो जाती हैं।

येशु वचन: अंतिम विचार

येशु व्यक्ति का अनुसरण → मोक्ष की ओर ले जाता है।
येशु वचन का अनुसरण → आंतरिक रूपांतरण की ओर ले जाता है।

जब हम क्षमा करते हैं, पवित्र जीवन जीते हैं, और बलिदानी प्रेम करते हैं, हम केवल आदेशों का पालन नहीं कर रहे – हम उसके समान बन

रहे हैं, जिसका नाम “परमेश्वर का वचन” है।

प्रार्थना

प्रभु येशु, हमारी मदद करो कि हम केवल आपको अपने उद्धारकर्ता के रूप में न मानें, बल्कि आपके शब्दों के अनुसार अपने जीवन का संचालन करें।
हमें सिखाओ कि आपकी सत्यता का पालन करके आपकी प्रकृति को प्रतिबिंबित करें।
आपका वचन हमारे भीतर समृद्ध रूप से वास करे, हमारे विचारों, निर्णयों और कार्यों को प्रतिदिन आकार दे। आमीन।

प्रभु आपको आशीर्वाद दे और आपका रक्षण करे।

Share on:
WhatsApp